Self Respect

12-07-2014

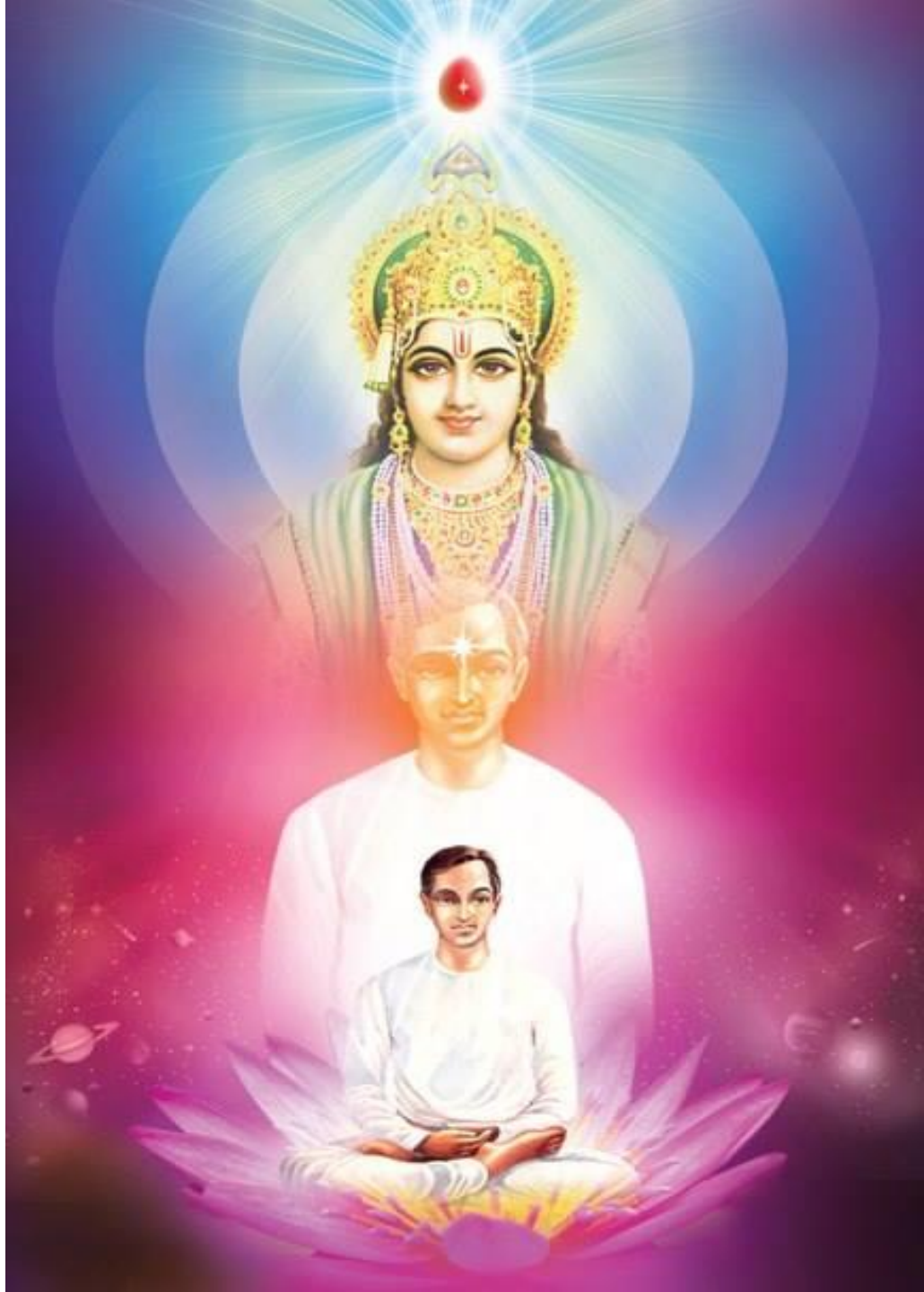

✓शास्त्र जो सुनाते हैं वह वचन ध्यान पर रखो । यहाँ तो बाप आत्माओं को समझाते हैं, तुम सब स्टूडेंट देही- अभिमानी होकर बैठो । शिवबाबा आते हैं पढाने के लिए । ऐसा कोई कॉलेज नहीं होगा जहाँ समझेंगे शिवबाबा पढ़ाने आते हैं । ऐसा स्कूल होना ही चाहिए पुरूषोत्तम संगमयुग पर । स्टूडेंट बैठे हैं और यह भी समझते हैं परमपिता परमात्मा आते हैं हमको पढ़ाने । शिवबाबा आते हैं हमको पढ़ाने ।

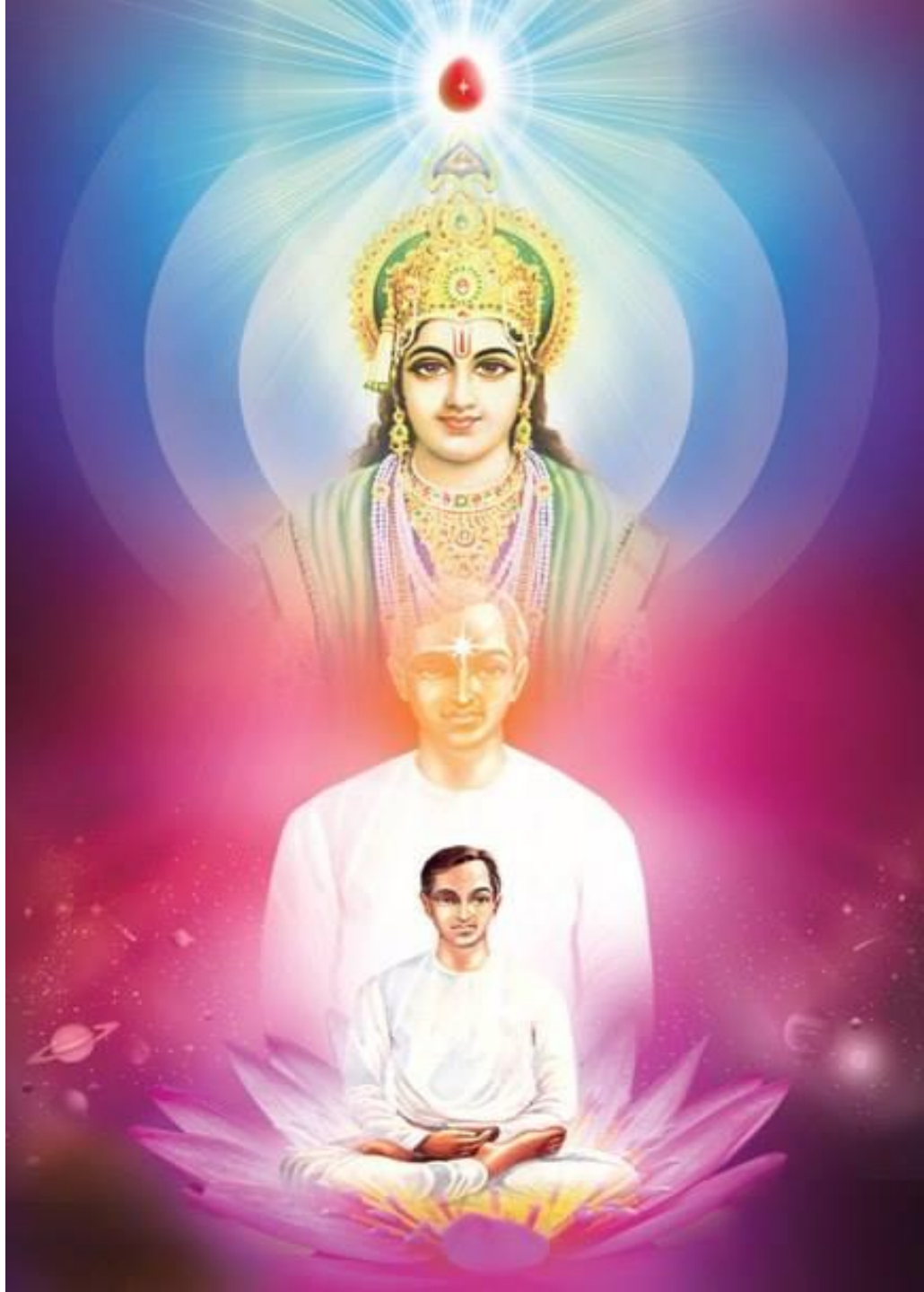

- ✓ संगम पर ही आकर बाप सिखलाते हैं किं अब चढ़ती कला शुरू होती है । हमको फिर अपने सुखधाम में जाना है ।

- ✓अभी तुम बच्चों को तो बैकुण्ठ बहुत नजदीक दिखाई देता है । बाकी थोड़ा टाइम है ।

- ✓ इस समय तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, इनके पहले थी मानव मत । दोनों में रात-दिन का फर्क है ।

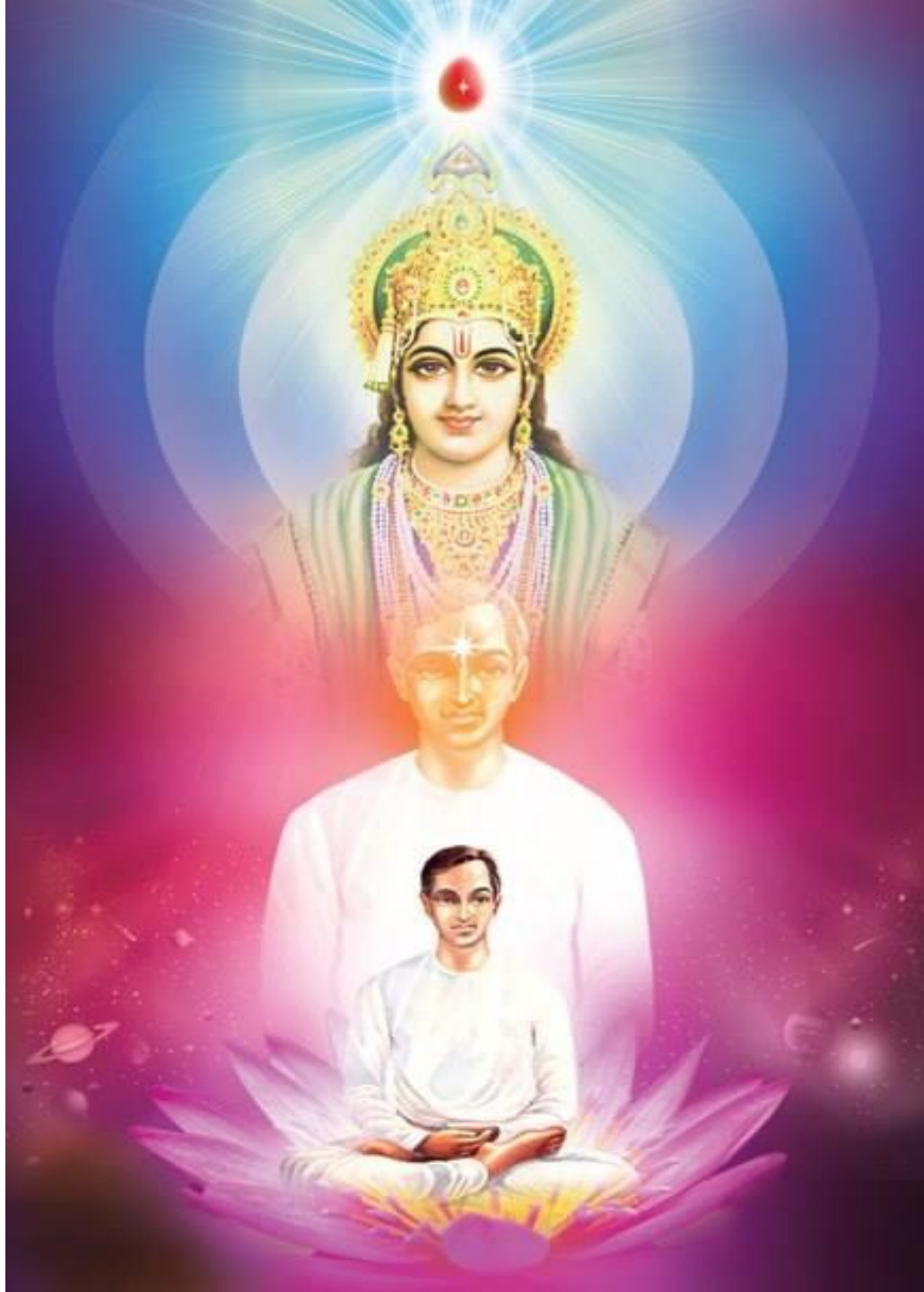

✓ ऊंच ते ऊंच बाप है, सारे विश्व को पावन बनाने वाला है । सारा विश्व पावन था, जिसमें भारत ही था । और कोई धर्म वाला कह न सके कि हम नई दुनिया में आये हैं । वह तो समझते हैं हमारे से आगे कोई होकर गये हैं ।

✓बच्चों को तो सब कुछ मिलता है । विश्व की बादशाही मिलती है तो फिर लोभ कर 10 - 20 साड़ियाँ आदि क्यों इकट्ठी करते हो ।

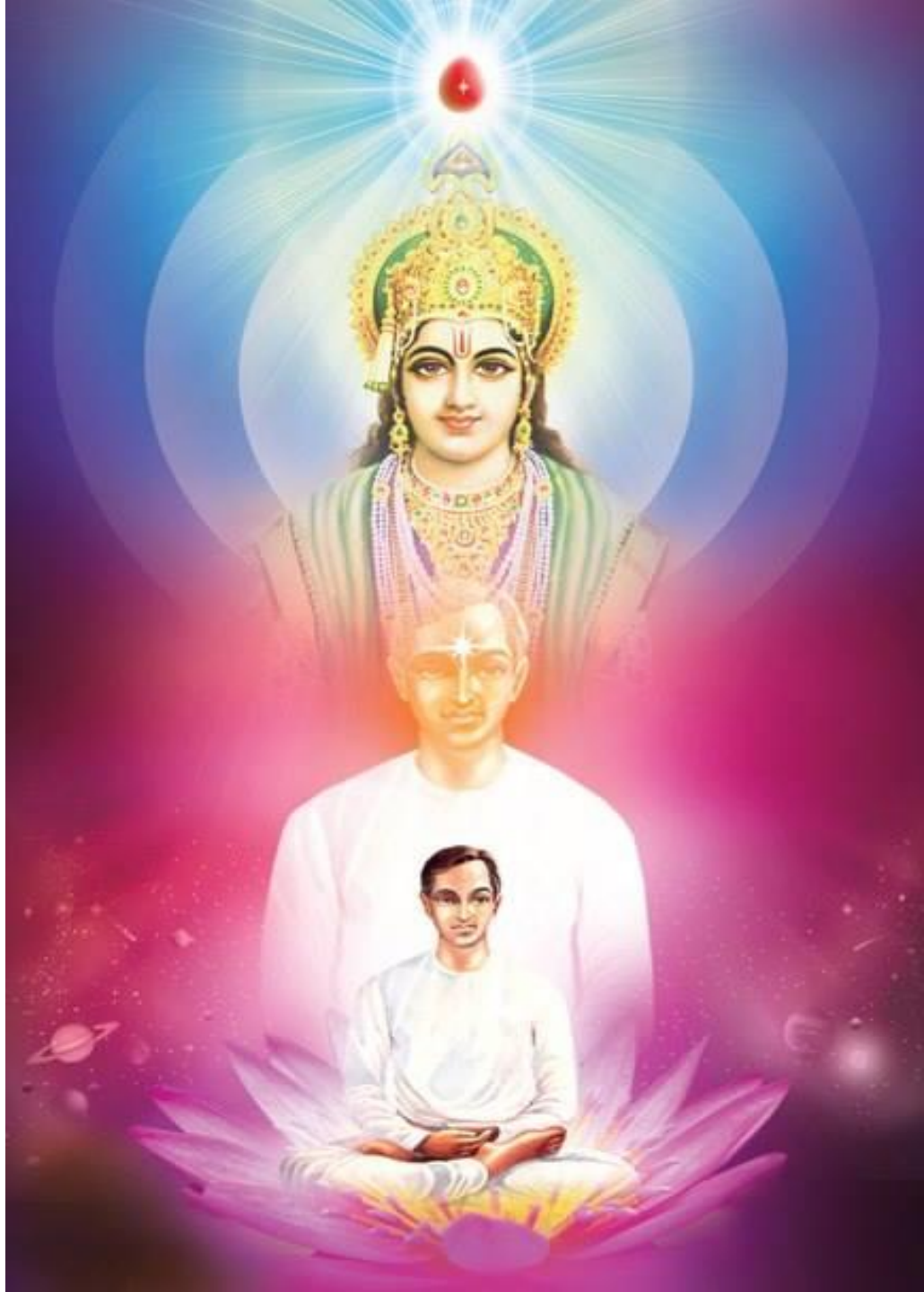

✓वरदान: बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा सर्व लगावों से मुक्त रहने वाले सच्चे राजऋषि भव !

✓अच्छा! मीठे- मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।